



किशोरियों के सशक्तिकरण में समाज एवं महाविद्यालय की भूमिका

श्रीमती माधुरीपाल

कु.मायावती राज.महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.)

प्रस्तावना

वर्तमान समय में बालिकाओं का सशक्तिकरण समय की मांग है। किशोरियों का सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा है जो समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किशोरियों के सशक्तिकरण से तात्पर्य है किशोरियों की स्थिति को सुदृढ़ बनाना, उन्हें सक्षम बनाना। किशोर उम्र के बालक और बालिकाएं समाज के भविष्य के नेतृत्व निर्माण और विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। किशोरावस्था के समय में सामाजिक एवं मानसिक विकास, परिपक्वता, स्वतंत्रता और समर्थन की आवश्यकताओं को समझना चाहिए और उन्हें समाज में समानता, समर्थन और स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त करने के लिए सामूहिक रूप से सशक्त करने का अवसर प्रदान करना चाहिए। भारत में किशोर आयु वर्ग के लगभग 230 मिलियन बालक-बालिकाएं हैं जिनमें लगभग 47 प्रतिशत महिलायें सम्मिलित हैं। इस समय में विशेष रूप से लड़कियों को स्वतंत्रता, समानता और समर्थन की आवश्यकता होती है ताकि वे समाज में अपनी स्थिति मजबूत कर सकें। किशोरियों के सशक्तिकरण में समाज एवं महाविद्यालय दोनों का सम्मिलित रूप से महत्वपूर्ण योगदान होता है।

किशोरावस्था---

किशोरावस्था मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण अवस्था है। किशोरावस्था के संबंध में यह परंपरागत रूप से विश्वास रहा है कि किशोरावस्था को एक क्रांतिक अवस्था के रूप में जाना जाता है। इसे मानव जीवन की जटिल अवस्था भी कहा गया है क्योंकि इस अवस्था में बालक को ना तो बालक कह सकते हैं ना ही प्रौढ व्यक्ति ही कह सकते हैं। वह स्वयं भी असमंजस की स्थिति में रहता है। इस अवस्था में बालक के शारीरिक, मानसिक एवं मनोवैज्ञानिक गुणों में परिवर्तन होता है जो की स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता है। किशोरावस्था में होने वाले सभी परिवर्तन परिपक्वता को प्राप्त करने के लिए अग्रसारित होते हैं। एक किशोर के लिए परिपक्वता का अर्थ होता है वयस्कों के समान अधिकार एवं सुविधाएं प्राप्त करना। इस समय बालक के अंदर शारीरिक एवं मानसिक गुणों में परिपक्वता आ जाती है। वास्तव में किशोरावस्था प्रौढत्व के तैयारी की अवस्था है, जब बालक एवं बालिकाएं प्रौढौचित व्यवहार तथा अभिवृत्तियों का विकास कर लेते हैं। किशोरावस्था का तात्पर्य है- परिपक्वता की ओर बढ़ना।

जर्सिल्ड(1978)के अनुसार – “किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें एक विकासशील व्यक्ति बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर बढ़ता है।”

हरलॉक के अनुसार— “किशोरावस्था समस्या के बाहुल्य की अवस्था है।”

एरिकसन के अनुसार -- “किशोरावस्था तीव्र गति से होने वाले परिवर्तनों का समय है जिसके अंतर्गत शारीरिक, मानसिक, क्रियात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक परिवर्तन देखे जाते हैं”।

सशक्तिकरण---

सशक्तिकरण शब्द का अलग-अलग संदर्भ में अलग-अलग अर्थ है। सशक्तिकरण शब्द के अर्थ में आत्म बल, आत्मनिर्णय, आत्म-स्वतंत्रता, आत्म-नियंत्रण, आत्मनिर्भरता, कर्तव्य एवं अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाना आदि सम्मिलित है। सशक्तिकरण एक सक्रिय एवं बहुआयामी प्रक्रिया है जो लड़कियों को जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण पहचान बनाने और उन्हें उनकी शक्ति पर भरोसा करने में सक्षम बनाती है। सशक्तिकरण का अर्थ है व्यक्तियों को स्वतंत्र रूप से सोचने और कार्य करने, विकल्प चुनने और समाज के समान सदस्यों के रूप में अपनी क्षमता को पूरा करने की शक्ति प्राप्त करना। इसके अतिरिक्त

सशक्तिकरण को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में भी कहा जा सकता है जो लोगों को उनके जीवन, उनके समुदायों, उनके समाज में उपयोग के लिए उनमुद्दों पर कार्य करनेकी शक्ति को बढ़ावा देती है जिन्हें वे महत्वपूर्ण मानते हैं। समाज के सर्वांगीण विकास के लिए किशोरियों का सशक्त होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक महिला परिवार का मूल है एवं समाजका आधा भाग हैं। लभग प्रत्येक समाज में तथा जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं को असमान स्थिति का सामना करना पड़ता है। महिलाओं पर हमेशा पुरुषों के साथ-साथ समाज का भी वर्चस्व रहा है। विकासशील देशों में महिलाएं हमेशा द्वितीयक स्थान प्राप्त करती हैं। भारत में महिलाओं को समान शिक्षा, समान रोजगार, समान वेतन और पुरुषों के समान दर्जे से वंचित किया गया है, महिलाओं से उनका मान-सम्मान, गौरव और आत्मसम्मान छीन लिया गया है। राष्ट्रीय विकास में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण है और यह तभी संभव है जब महिलाओं को समाज में उचित एवं सम्मानजनक स्थान प्रदान किया जाये। उनकी अनावश्यक बंधनों से मुक्ति राष्ट्र की आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति के लिए आवश्यक है। महिलाओं को विकास प्रक्रिया में एक शक्ति के रूप में पहचाना जाना चाहिए।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का कहना था कि--“लैंगिक असमानता चाहे वह आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक अथवा अन्य किसी क्षेत्र में हो मानवीय गरिमाकी स्थापना के लिए उसे दूर करना आवश्यक है। लिंग के आधार पर महिलाओं के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए।”

समाज की भूमिका--किशोरियां हमारे समाज का एक महत्वपूर्ण भाग हैं। किशोरियों का सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा है, जो समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किशोर उम्र के लड़के एवं लड़कियां समाज के भविष्य के निर्माण और विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। किशोरावस्था एक ऐसा समय है जब युवावस्था की शुरुआत होती है और व्यक्ति अपनी पहचान बनाने के लिए अनेक संघर्षों का सामना करता है। इस समय में विशेष रूप से लड़कियों को स्वतंत्रता, समानता और समर्थन की आवश्यकता होती है ताकि वह समाज में अपनी स्थिति मजबूत कर सके तथा अपने अधिकारों को प्राप्त कर सके। इसका महत्वपूर्ण पहलू समाज में लड़कियों की स्थिति को सुधारना है। किशोर उम्र के लड़के एवं लड़कियां समाज के भविष्य के निर्माण और विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इस समय का सामाजिक एवं मानसिक विकास परिपक्वता स्वतंत्रता और समर्थन की आवश्यकताओं को समझता है और उन्हें समाज में समानता समर्थन और स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त करने के लिए सामूहिक रूप से सशक्त करने का अवसर प्रदान करता है।

ऐतिहासिक रूप से समाज में लड़कियों को कमजोर और प्रतिबंधित माना जाता था लेकिन किशोरियों की सशक्तिकरण के संदर्भ में वर्तमान परिदृश्य में यह दृष्टिकोण बदल रहा है। लड़कियों को शिक्षा स्वास्थ्य स्वतंत्रता और समानता के माध्यम से सशक्त करने के लिए समाज में उपाय किए जा रहे हैं। समाज और महाविद्यालय दोनों ही किशोरियों की सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाज में सामाजिक संगठन, परिवार, शिक्षा और धार्मिक संस्थाओं को महिला सशक्तिकरण का समर्थन करना चाहिए ताकि किशोरियों को समाज में समानता का अधिकार प्राप्त हो सके। समाज के द्वारा किशोरियों के लिए सुरक्षित और संरक्षित करने के अवसर प्रदान किये जाने चाहिए ताकि वे अपनी क्षमताओं का पूरा प्रयोग कर सकें। महिला सशक्तिकरण के लिए समाज की जटिल संरचना एवं प्रतिबंधों को बदलने की आवश्यकता है जिससे लड़कियों को समानता और समर्थन प्राप्त हो सके। सशक्तिकरण के लिए समाज में लड़कियों के शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए विभिन्न नीतियों एवं कानून को बदलने की आवश्यकता होती है। किशोरियों के सशक्तिकरण के लिए शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक संसाधनों का समावेश आवश्यक है।

महाविद्यालय की भूमिका—महाविद्यालय को केवल शिक्षा प्रदान करने का केंद्र नहीं माना जाता है बल्कि यह युवाओं को नए पथ पर अग्रसर करने में महती भूमिका निभाता है। महाविद्यालय में किशोरियों को नए सोच के साथ जीवन में आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त होता है। यहाँ वह नेतृत्वक्षमता, सामाजिक सहयोग, आपसी मेलजोल और समानता की भावना को विकसित करती है। महाविद्यालय किशोरियों को समाज में उनके अधिकार एवं उत्तरदायित्व के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध कराने का माध्यम बनता है।

समाज एवं महाविद्यालय का आपस में गहरा सम्बन्ध होता है। महिलाओं के लिए महाविद्यालय सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। वहाँ वे अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए अवसर प्राप्त करती हैं। महाविद्यालय में महिलाओं को उत्कृष्टता की ओर प्रोत्साहित किया जाता है। वहाँ वे अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता की प्राप्ति के लिए प्रेरित की जाती हैं और अपनी प्रतिष्ठा को विकसित करने के लिए उत्साहित होती हैं। विद्यालय में महिलाओं को सामूहिक समर्थन भी मिलता है जो उन्हें अपने अध्ययन और संघर्षों में सहयोग प्रदान करता है इससे उनका स्वाभाविक संघर्ष कम होता है और वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अधिक अग्रसर होती हैं। महाविद्यालय महिलाओं को आत्मविश्वास और आत्म समर्थन का अवसर प्रदान करते हैं। वहाँ उन्हें अपने अभिवादन और सपनों की प्राप्ति के लिए आत्म-संदर्भी बनाने

की प्रेरणा मिलती है। महाविद्यालय समाज का उत्थान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किशोरियों के सशक्तिकरण के लिए समाज एवं महाविद्यालय दोनों को एक साथ मिलकर काम करना होगा ताकि हम समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार कर सकें और सभी लड़कियों को समानता, स्वतंत्रता और समर्थन की सही मान्यता प्रदान कर सकें।

किशोरियों के सशक्तिकरण के संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक है।

शिक्षा—किशोरियों के सशक्तिकरण के लिए शिक्षा को उपलब्ध कराना अत्यंत आवश्यक है। उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा के माध्यम से लड़कियां अपनी प्रतिभा को विकसित कर सकती हैं। शिक्षा की उपलब्धता से किशोर बालिकाओं को सामाजिक, आर्थिक और मानवाधिकारों संबंधित जानकारी प्राप्त होती है। शिक्षा उन्हें स्वतंत्र और समर्थ बनाती है और उनकी स्थिति में सुधार लाने एवं परिवर्तन के अवसरों को प्रदान करती है। किशोरियों हेतु समाज को समान शिक्षा के अधिकार का पालन दृढ़तापूर्वक करना चाहिए ताकि किशोरियाँ भी अपनी प्रतिभा एवं कौशल को विकसित कर सकें और समाज को उन्नत बनाने में अपना योगदान दे सकें। शिक्षा के माध्यम से किशोरियों को आत्मनिर्भरता, स्वतंत्रता की भावना, सामाजिक जागरूकता और कौशल विकास का उचित माध्यम प्राप्त होता है। महिलाओं की शिक्षा में निवेश करने से समाज में उनकी स्थिति में सुधार होगा और सामाजिक विकास भी हो होगा।

विद्यालय और शैक्षणिक संस्थाओं के प्रमुख अधिकारी और शिक्षण नियामक निकायों के अधिकारी शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न नीतियों को संचालित करते हैं और शिक्षा की उपलब्धता को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

स्वास्थ्य सेवाएं एवं कार्यक्रम—स्वास्थ्य सेवाएं महिलाओं एवं किशोरियों के लिए विशेष महत्व रखती हैं। स्वास्थ्य सेवाओं का उपलब्ध होना अत्यंत आवश्यक होता है। मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों ही विशेष महत्वपूर्ण हैं। महिलाओं को नियमित चेकअप, गर्भावस्था की देखभाल, जनन स्वास्थ्य सुविधाएं और परिवार नियोजन की सुविधा प्रदान की जानी चाहिए। इसके अलावा समुदाय केन्द्रों और अस्पतालों में महिलाओं के लिए विशेष योजनाओं एवं सुविधाओं की व्यवस्था की जाती है जो महिलाओं की विशेष परिस्थितियों में उनकी आवश्यकता के अनुसार ध्यान रखने में सहयोगी हो ते हैं। किशोरियों के लिए स्वास्थ्य कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है जिनमें स्वास्थ्य, संचार, निरोगी आहार, पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन संबंधी ज्ञान की जरूरत का महत्वपूर्ण ज्ञान दिया जाता है।

मानसिक स्वास्थ्य—किशोरावस्था में मानसिक स्वास्थ्य को समझना भी एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इस अवधि में होने वाले विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं और समस्याओं को ध्यान में रखना होता है। इस उम्र में युवा व्यक्तिगत, शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से परिवर्तन और विकास का अनुभव कर रहे होते हैं। इस उम्र में युवा अपने आप को समझने और अपनी भावनाओं को संवेदनशीलता के साथ संभालने की प्रक्रिया में होते हैं। युवा अपनी व्यक्तित्व, रुचियां और अनुकरणीयता के प्रति अपनी भावनाओं को समझने और स्वीकार करने का प्रयास करते हैं। इसके साथ ही उन्हें सामाजिक संबंधों के माध्यम से अपनी पहचान और स्थिति का संदर्भ भी समझना होता है। इस उम्र के युवा व्यक्ति अक्सर भावनात्मक और मानसिक संतुलन में चुनौतियों का सामना करते हैं। हार्मोनल परिवर्तन, स्थानिक एवं सामाजिक दबाव और आत्म स्वीकृति के मुद्दे उनके लिए मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं इस प्रकार युवाओं को अपने आप को समर्थ और स्वीकार्य महसूस करने के लिए सही समर्थन और उचित संदेश की आवश्यकता होती है। समाज में सही बातचीत के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों का समाधान किया जा सकता है। परिवार, शिक्षक और समाज के अन्य सदस्यों के साथ संवाद से युवा व्यक्ति को समाधान आत्म-सम्मान सहित मानसिक स्वास्थ्य की संवेदनशीलता प्राप्त हो सकती है। मानसिक स्वास्थ्य को समझना एवं समस्याओं का समाधान किया जाना युवा व्यक्ति के समाज में सफलता, स्वास्थ्य, समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है।

सामाजिक संज्ञान -- समाज में किशोरियों के संज्ञान को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न सामाजिक अभियान जैसे- बालिका शिक्षा पर प्रबल जोर देना, बालिकाओं के स्वास्थ्य की देखभाल एवं जानकारी, बाल विवाह के खिलाफ अभियान, लैंगिक भेदभाव एवं घरेलू हिंसा की रोकथाम इत्यादि कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया जाना चाहिए।

समाज में किशोरियों को उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में जागरूक करना आवश्यक है। भारत सरकार एवं विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं के माध्यम से किये जा रहे प्रयासों की जानकारी किशोरियों को समाज एवं महाविद्यालय द्वारा प्रदान की जानी चाहिए तथा उन्हें नियमित रूप से अपनी समस्याओं और अनुभवों को साझा करने का अवसर भी मिलना चाहिए।

कौशल विकास—किशोरावस्था में कौशल विकास एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक प्रक्रिया है, जो युवाओं को उनके भविष्य के लिए तैयार करती है। इस अवधि में वे अपने विचार एवं कौशल की योग्यताओं को विकसित करते हैं। किशोरावस्था में शैक्षिक कौशल का विकास भी महत्वपूर्ण है क्योंकि युवाओं को अच्छी कौशलपूर्ण शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए जिससे उन्हें समाज में सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने में मदद मिलती है। युवा व्यक्ति को नौकरी कौशल, संचार कौशल, समस्या समाधान कौशल, सहयोगी टीम के साथ काम करने का कौशल, विकसित करना चाहिए। किशोरियों को जीवन में सफलता प्राप्त करने

के लिए कौशल विकास की आवश्यकता होती है। इसमें विभिन्न कौशल सम्बन्धी शिक्षा एवं प्रशिक्षण, नौकरी कौशल और उच्च शैक्षिक योग्यता शामिल है। किशोरियों को विभिन्न कौशल जैसे –नेत्रत्व, संवाद और समस्या समाधान करने का भी प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए जिससे उनके आत्म विश्वास, स्वाभिमान एवं आत्मप्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

आत्मनिर्भरता एवं स्वावलंबन-- समाज एवं महाविद्यालय के संयुक्त प्रयास से किशोरियाँ स्वतंत्रता के साथ सोचने की क्षमता, विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान खोजने की क्षमता, सहनशीलता और आत्मनिर्भरता की भावना सीखते हैं। किशोरियों को समाज में स्वतंत्रता के साथ अपने विचारों को व्यक्त करने और समाज में अपनी स्थिति को समझने का समर्थन प्राप्त होता है जिससे वह स्वावलंबन की भावना को प्रबल बनाती हैं तथा कौशल विकसित करती हैं। समाज एवं महाविद्यालय के मार्गदर्शन एवं निर्देशन से युवा स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होते हैं। महाविद्यालय एवं समाज के सकारात्मक सहयोग से युवा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होते हैं एवं स्वावलंबी बनते हैं।

सुरक्षात्मक परिवेश--परिवार को समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई माना जाता है। युवा समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। किशोरियों को परिवार एवं समाज द्वारा सकारात्मक रूप से समर्थन की आवश्यकता होती है। उन्हें समाज एवं परिवार के द्वारा सुरक्षित एवं सहानुभूतिपूर्ण माहौल प्रदान किया जाना चाहिए। किसी भी प्रकार की अशिक्षा, हानिकारक एवं संदेहात्मक धारणाओं का प्रचार-प्रसार व समर्थन नहीं किया जाना चाहिए। बालिकाओं को उनके उत्थान एवं सुरक्षा हेतु सहानुभूतिपूर्ण समर्थन प्राप्त होना चाहिए जिससे वह स्वयं के सपनों को पूरा करने में सक्षम बनती हैं तथा सशक्त समाज का सपना पूर्ण करने में महत्वपूर्ण कड़ी बनती हैं।

लैंगिक समानता --भारत में लैंगिक समानता के प्रयासों ने महिलाओं के सशक्तिकरण की गति को प्रभावित किया है। लैंगिक समानता एक महत्वपूर्ण विषय है जो किशोरियों के सामाजिक, मानसिक एवं व्यक्तित्व विकास को सुनिश्चित करने में मदद करता है। लैंगिक समानता के माध्यम से किशोरियों को सामाजिक तथा आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है।

किशोरियों के सशक्तिकरण के लिए लैंगिक समानता का प्रचार-प्रसार करना आवश्यक है। समाज में लैंगिक भेदभाव को खत्म करने के लिए शिक्षा प्रणाली में सुधार किया जाना चाहिए। समाज में जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है। किशोरों एवं किशोरियों को लैंगिक संबंधों और स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी प्राप्त करने का मौका देना चाहिए। लड़कियों को शिक्षा के क्षेत्र में अधिक समर्थन देने के लिए उन्हें आर्थिक सहायता और योग्यता के लिए समर्थन प्रदान किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त लैंगिक स्वतंत्रता और स्वाधीनता का मौका भी मिलना चाहिए। लैंगिक समानता के माध्यम से किशोरियों को खुद को प्रभावशाली और स्वावलंबी बनाने का मार्ग मिलता है। इससे न केवल उनका स्वास्थ्य व शिक्षा में समृद्धि होती है बल्कि वह समाज में भी अधिक सक्रिय भूमिका निभाने में सक्षम होती है। लैंगिक समानता नही केवल किशोरियों के लिए बल्कि समाज के लिए भी महत्वपूर्ण विषय है जो बालिकाओं के जीवन में समृद्धि लाता है और समाज में समानता की दिशा में आगे बढ़ने में मदद करता है।

इन सभी पहलुओं से समाज और महाविद्यालय दोनों किशोरियों के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भी भूमिका निभाते हैं। किशोरियों के सशक्तिकरण के लिए समाज और महाविद्यालय दोनों को साथ मिलकर काम करना होगा। किशोरियों को स्वतंत्र और समर्थ बनाने के उपाय को सुनिश्चित करने के लिए सभी स्तरों पर प्रयास किया जाना आवश्यक है ताकि हम समाज में महिलाओं की सक्रिय और सकारात्मक सहभागिता सुनिश्चित कर सकें।

REFERENCES---

- [1] Mandal B. (2018).A study of Women Empowerment in 21st century.” International Journal of Research and Analytical Reviews, Volume 5
- [2] Suresh,P. (2017).”Women Empowerment in India-A Changing Scenario.” Kaav International Journal of Arts, Humanities & Social Sciences, 4
- [3] Khatri,R. (2016).”The Role of Education towards Women Empowerment in India.”International Journal of Advance Research,4
- [4] Panda,D. [2017].”Women Empowerment in India :Rational and Present State.”International Journal of Emerging Research in Management & Technology,6
- [5] Bera, N. (2016). “Women Empowerment through education.”International Journal of Humanities & Social Science Studies,II